हर जोर जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है ।
तुमने मांगें ठुकराई है तुमने तोड़ा है हर वादा
छीना हमसे सस्ता अनाज तुम छटनी पर हो आमादा
लो अपनी भी तैयारी है लो हमने भी ललकारा है
हर जोर जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है ।

प्रकाशक : लोक साहित्य परिषद, द्वारा छत्तीसगढ़ मुक्ति मो
सी एम. एस. एस. आफिस, दल्ली राजहरा, (म. प्र.) ४९१-२२८

मुद्रक : बजाज प्रिन्टर्स, मेन रोड, दल्ली राजहरा

प्रकाशन काल : जून १९९१ सहायता राशि : १ रूपये

गीत- कविताओं का संकलन

संघर्ष की पुकार

लोक साहित्य परिषद

भिलाई–उरला–टेडेसरा–बलौदाबाजार के श्रमिक आज एक जीवनपण संघर्ष में शामिल हैं ।

लोक साहित्य परिषद

प्रस्तुत करता है

इस संघर्ष की गीत-कविताओं का यह संकलन

दो शब्द	१
मजदूर साथी करे पुकार – इन्कलाब जिन्दाबाद	३
आज की ताजा खबर	६
कैइसे कानून बनायेस सरकार बाबू	८
नारी कहैलो नर से परदा हटाव घर से	१०
लाल हरा झंडा हमारा	११
किसका कानून, किसका नेता	१२
कहानी : सरकार मालिक की.....	१२
सरकार के घर मे अंधेरी रात	१३
लाल हरा झण्डा के राहत ले, गरीब के गरीबी भगाना है	१४

दो शब्द

पेश है भिलाई मजदूर आंदोलन से उभरी कविता और गीतों का एक संकलन । पिछले करीब एक साल से भिलाई, उरला, टेडेसरा व बलौदाबाजार के श्रमिक एक ऐतिहासिक संघर्ष में शामिल है । सिर्फ जीने के लायक वेतन, स्थाई नौकरी और बोनस आदि सुविधाएं की मांग को लेकर ही नहीं, बल्कि वे लड़ रहे हैं एक खुशहाल जिंदगी बेहतर समाज के सपनों को दिल में लेकर । संकलन के पहली दो कविताओं को छोड़कर बाकी सभी गीत मजदूरों ने ही लिखी हैं ।

संघर्ष (वर्ग संघर्ष) से नया समाज की सृष्टि होती है, जन संघर्ष से जन्म लेती है नयी जन संस्कृति, नयी गीत, नयी कविता, नयी कहानी । हर जन आंदोलन से जुड़ी हुई गीत, कविताएं होती है । आन्दोलन एक दिन समाप्त होता है, लेकिन आन्दोलन से उभरी गीत -कविता आने वाली पीढ़ी को संघर्ष के लिए प्रेरित करते रहती है । अन्याय के खिलाफ, शोषण के विरूद्ध जन आंदोलन की कहानियों से, गीत-कविताओं से जनता शिक्षा लेती है ।

दल्ली राजहरा के खदान-मजदूरों के संघर्षो से भिलाई के औद्योगिक मजदूर शिक्षा लिए हैं, दल्ली राजहरा के आन्दोलनों पर लिखी गयी का. फागुराम की गीत उन्हें संघर्ष के मैदान में उतरने के लिए प्रेरित की है । भिलाई आंदोलन के गीत भी दूसरे स्थानों के मज -दूरों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी ।

मजदूर आंदोलन की शुरूआत तो फैक्ट्री से होती है, लेकिन आंदोलन सिर्फ फैक्ट्री में ही सीमित नहीं रहता है । आंदोलन में मज-दूर के परिवार के लोग, उनके आत्मीय परिजन भी शामिल हो जाते हैं । इस संकलन के गीतों में भी हमें यह देखने को मिलेगा ।

संकलन के गीत-कविताओं में से कुछ हिन्दी में लिखी हुई है, तो कुछ छत्तीसगढ़ी में, कुछ भोजपुरी में । लेकिन हर कविता में शोषकों के प्रति तीव्र घृणा और एक नयी स्वप्ननील समाज व्यवस्था की कल्पना हमें देखने को मिलेगी ।

जब कौशल्या बाई लिखती हैं, 'कैइसे कानून बनायेस सरकार बाबू', तब रामलखन गरज उठते हैं 'कटबो हम पापिन के गरदनवां ।' भीमराव बागड़े पूंजीपतियों को व्यंग करते हैं 'पगला गया है मूलचंद–केडिया.....', कमलेश शुक्ला सपना देखते हैं 'मजदूरों का ही बनेगा सरकार ..।' मकसूदन आव्हान करते हैं 'आवो साथी हम संगठन बनायें'। संकलन की हर एक गीत अपनी अपनी विशेषताओं से भरपूर है ।

इस संकलन में हम सब गीतिकारों की सभी गीतों को शामिल नहीं कर पाये हैं । इन गीतिकारों के अलावा भी स्रष्टा होंगे जिन्होने आंदोलन के दौरान नयी सृष्टि की है । उन सभी सृष्टिओं को हम फिर आपके समक्ष पेश करेंगे संघर्ष की गीतों का दूसरा संकलन में ।

लाल जोहार !

सम्पादक

मजदूर साथी करे पुकार.....
इन्कलाब जिन्दाबाद

भाजपा सेठों की पार्टी है,
मुनाफे में थोड़ी सी भी कमी
लालची उद्योगपतियों और धन्ना सेठों को निर्दयी बना देती है ।
इसीलिये, सन १९७७ में
भाजपा के मुख्यमंत्री सखलेचा ने दल्ली-राजहरा में
मजदूरों पर गोली चलवाई थी ।
पुनः भाजपा के मुख्यमंत्री कैलाश जोशी ने सालभर के भीतर
अप्रेल १९७८ में बैलाडीला में मजदूरों पर गोलियां चलवाई ।

फिर से आ गई भाजपा सरकार,
लेकर गोलियों का उपहार
पटवा जी की गोली..... ...
अभनपुर में मजदूरों पर चली, मई १९९० में ।
अनूपपुर भी दहल उठा था
पटवा जी की गोली से १९९० नवंबर में ।

१९७७, नियोगी के नेतृत्व में,
राजहरा की बात थी
इसलिये मैं खामोश था ।
१९७८, दूर..... शालबनों के द्वीप में
बैलाडीला में हलचल हुई,
इन्द्रजीत सिंह, एटक ने मोर्चा सम्हाला था,
उनसे भला मेरा क्या ताल्लुक ?
१९९०, अभनपुर में मजदूरों के अगुवा
टी यू सी आई के फिलिप कोशी थे
तब भी हम चुप रहे ।
अनूपपुर में इंटुक वालों पर गोली चली
तब भी दूर की बात जानकर

हम खामोश रहे ।
अब,
सेठों की पार्टी भाजपा,
भाजपा की सरकार,
सरकार की पुलिस,
इस पुलिस नें दस्तक दी है
मेरे दरवाजे पर.....
मेरा साथ कौन देगा ?

मुझे तो कोई दिखता भी नहीं है ।
क्या मजदूरों को बिखारने के लिये सेठों का हमला होता रहेगा
लूट का राज चलता रहेगा ?
यह सोचने का वक्त है ।
यही निर्णय लेने का वक्त है ।

बी.एस.पी. के मैनेजिंग डायरेक्टर, धर्मपाल गुप्ता, सिम्पलेक्स,
बी. आर. जैन, विजय केडिया और खेतावत ने एकता बनाई है ।
मजदूरों को कुचलने के लिये,
गुण्डों को लगा दिया है,
और गुण्डों की हिफाजत
साथ ही मजदूरों की मरम्मत के काम को
अंजाम देने के लिये
गुण्डों के साथ लगी पुलिस
'देशभक्ति और जनसेवा'
के नाम पर ।
जब बी.जे.पी. और बी.एस.पी. एक हो जाते है,
तब भिलाई की मजदूर बस्तियों में,
आतंक का राज होता है,
चाकू और भाले चला करते हैं मजदूरों पर
मजदूर नेताओं को सड़ाया जाता है
जेल की काली कोठरी में,

और, स्थाई नौकरी
जीने लायक वेतन मांगने वालों को
भूख से तड़फाया जाता है ।

यही सोचता हूं,
सोच की तीव्रता से भिच जाती है मुट्ठियाँ
भूख की मार से तन भले कमजोर है
पर मरा नहीं है मेरा आत्मविश्वास
और उसी विश्वास के बल पर
मेरी बंद मुट्ठी लहरा उठती है आसमान में ।
जेल की कोठरी से
निस्तब्ध रात्रि में सुनवाई देती है
भिलाई के दूर-दराज की मजदूर बस्तियों से
उठती आवाज
इंकलाब जिंदाबाद ।। इंकलाब जिंदाबाद ।।

छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा
का प्रचार पत्र से
६-२-९१

आज की ताजा खबर

अखबार का हॉकर सड़क पर चिल्ला रहा है,
चिल्ला-चिल्ला कर लोगों को बता रहा है,
आज की ताजा खबर.....
कि
वह बच नहीं पाया इस बार
सफल हो गई है उसे पकड़ने में वर्तमान सरकार
वह,
जो है एक अपराधी खूंखार
सनसनीखेज आरोपों से लैस
वह रातबिरात, दिन - दहाड़े
घूमता फिरता था,
खेतों में, खलिहानों में, खदानों में,
मिलों में, कारखानों में।
मजदूरों को उनकी औकात का
एहसास कराता था,
जब चाहे तब कहीं भी काम बंद हो जाता था।
आम लोग उसकी बात समझकर
मानने लगे थे।
हिम्मत से सीना तानने लगे थे।
बदतमीज हो गये थे इतने
कि सेठों, अफसरों, मिल-मालिकों पर
रौब झाड़ने लगे थे।
एक के बाद एक
कारखानों, गांवों और झोंपड़पट्टियों में-

लाल-हरा झंडा गाड़ने लगे थे।
कांपने लगी थी पूंजीपतियों की तिजोरियाँ,
ठेकेदारों का हाथ बार-बार अपनी जेबें सम्हलता था,
दारू की दुकानों की पेटियां भर नहीं पाती थी,
उसके आतंक से,
धन्ना सेठों की नींद उड़ जाती थी।
भला हो वर्तमान सरकार का
जिसने उसे पकड़ लिया,
और उसे लोहे की सलाखों के पीछे डाल दिया।
अब सब कुछ सुरक्षित हो गया है
टल गया हैं खतरा.
अमन चैन हो गया हैं चारों ओर
थम गया है शोर
ओम् शांतिः शांतिः शांति।

श्याम बहादूर "नम्र"
जनवादी कवि, श्रम-निकेतन, जमुड़ी
अनूपपुर, शहडोल

कैइसे कानून बनायेंस सरकार बाबू....

कैइसे कानून बनायेस सरकार बाबू,
कैइसे कानून बनाये जी।
एगा सरकार बाबू
कैइसे कानून बनायेंस जी।
काबर कलम राखेहस बाबू,
काबर राखे दवाद जी,
काबर राखे कापी हो बाबू,
काबर कुर्सी में बैठेस जी ?
कानून कायदा के नइहे ठिकाना,
मजदूर के ऊपर शोषण बरसाना,
सरकार बाबू कैइसे कानून बनायेस जी,
एगा सरकार बाबू गा
कैइसे कानून बनायेस जी।

८ घंटा ले हमन कमाथन बाबू
खून पसीना बोहाथन जी,
आगी पानी ला कमाकें जी ला उबारथन बाबू
तबले लइका हमर भूख मरथे जी।
मुक्ति के आवाज मजदूर उठाथे तब
ये पुलिस हा जेल में बेड़ देथे।
सरकार बाबू, कैइसे-कैइसे कानून
बनाये सरकार बाबू।
सूत कें उठथन सरकार बाबू,
कंपनी में डिप्टी हमन जाथन जी,
लोहा लक्कड़ ला हम उठाथन बाबू
तबले पसिया बिना तरसथन जी।
कैइसन कानून बनायेस सरकार बाबू।
सूत के उठथन हमन हर बाबू,
लांघन भूखन हमन डिप्टी जाथन जी,
लोहा लक्कड़ ला हमन उठाथन बाबू,
लोहा मजदूर के ऊपर गिरथे जी,
वोही में दबके हमन मर जाथन
मजदूर लाश नजर आथे सरकार बाबू।
कैइसे कानून बनायेस जी।

कौशल्या बाई
ए. सी. सी. सीमेन्ट फ़ैक्ट्री, जामुल
में कार्यरता ठेका मजदूर

नारी कहेली नर से परदा हटाव घर से

सुनी-सुनी मजदूर के वेअनवा
नयनवां तरसे । २
मजदूर किसान भाई हम सब भाई भाई
मिली जुली जइले रन के मैदनवां,
नयनवां तरसे ।
नारी कहेली नर से परदा हटाव घर से
हमहूं चलवा रन के मैदनवां
नयनवां तरसे ।
जैसे दुर्गावती रहली अंग्रेजवा से लड़त रहली,
ओइसे हमहूं चलवा रन के मैदनवां,
नयनवां तरसे ।
लड़िका भुखाइल गईले,
शासन बिकाई गईले,
नाहीं सुने मजदूर के बेयनवां,
नयनवां तरसे ।
कलयुग में काली बनबे,
रनवा में तेगा धरबे,
कटबे हम पापिन के गरदनवां
नयनवां तरसे ।
बालक कहेले पापा झंडा बनाव,
हमत चलब तोहरे संघवा,
नयनवां तरसे ।
कहे रामलखन भाई जिला बैशाली
भाई, लिखेला मजदूर के बेयनवां
नयनवां तरसे ।

रामलखन
सिम्पलेक्स, टेडेसरा में कार्यरत
श्रमिक

लाल हरा झंडा हमारा

लाल हरा हे झंडा हमारा,
साथियों आवो संगठन बनाये ।
एकता का यही निशानी,
लाल हरा हे जग में नूरानी ।।
लाल रंग शहीद कुर्बानी,
हरा रंग हे धरा की निशानी ।
किसान-मजदूर सभी भाई-भाई,
मिलजुल लड़ेंगे लड़ाई ।।
ये झंडा हे दुई रंग वाली,
लाल हरा झंडा हमारा ।
लोभ लालच रहता किनारा,
सच खातिर लड़ता बिचारा ।।
भाई शहीद लोग कहते पुकारे,
लाख दुश्मन अगर टकराये
पांव पीछे कभी न हटाना,
चाहे सीने पर गोली हो खाना ।
इन पापियों से मुक्ति खातिर,
आवो साथी हम संगठन बनाये,
लाल हरा झंडा हमारा ।

मकसूदन
सिम्पलेक्स, टेडेसरा में कार्यरत

किसका कानून, किसका नेता

कनवा होगे कानून अऊ भैरा हे सरकार,
नई चिन्हे गरीब जनता ला अऊ सुने पुकार ॥
आजकल के ठुठवा नेता हांके डोंग हजार,
कहिथे सबला मिलके ग्हू लड़बो बीच बजार ॥
खोजे उधारी पैसा नई मिलय मिलवो तहू ब्याज में,
लोग लइका ला कइसे जियाबो घुंसखोरी के राज में ॥

समारूराम
सिम्पलेक्स, उरला में कार्यरत
मजदूर

कहानी : सरकार मालिक की.......

पगला गया है मूलचंद-केडिया पटवा के राज में,
होती नेता मंत्रियों की नीलामी, रिश्वत के बाजार में ।
मजदूर अपनी जब माँग करते,
बेईमान अधिकारी खूब दलाली करते ।
जरा संभल के । सोच समझ के ।
आयेगा बूरा दिन तुम्हारा हम मजदूरों के राज में,
हो, हो हम मजदूरों के राज में ।
पगला गया........................ ।
किसान मजदूर भटक रहे,
रोजी रोटी के लिए तरस रहे ।
ऐसा न होगा । अब न चलेगा ।
हमें बनना होगा वीर नारायण, काले अंग्रेजों के राज में
हो, हो काले अंग्रेजों के राज में ।२।
पगला गया........................... ।

पटवा के मंत्री उपलब्धियां गिनाते ।
जातियों के नाम पर दंगे कराते ॥
आडवानीजी पूजते झुलेलालजी,
करते बेईमानी राम नाम पर इन शोषकों के राज में,
हो, हो शोषकों के राज में, ।।२।।
पगला गया........ .... ।

भीमराव बागड़े
छत्तीसगढ़ केमिकल्स मिल्स मजदूर
संघ के कार्यकर्ता

सरकार के घर में अंधेरी रात

चांदनी थी तेरे आंगन में, अब अंधेरी आ गया,
काली बादल बन मजदूरों ने चारों दिशा पे छा गया ।
मजदूरों का हक तू दे दे, इसमें है सबका भालाई,
सामने क्यों नहीं आते, क्यों करते हो मुंह छुपाई ॥
मजदूर जब रूठ जायेंगे, तो तुम कहीं नहीं छुप पायोगे ।
इसी मजदूरों ने तेरे आंगन की रोशनी हटा दिया,
चांदनी थी तेरे आंगन में, अब अंधेरी आ गया ।
शोषणवादी का है ये सरकार, मजदूरों के लिए बिल्कुल बेकार ।
किसानों को धोखा देने वाले हैं, कर्ज माफी केवल इनके बहाने हैं ॥
अब देख तेरे आंगन का फूल मुरझा गया ।
चांदनी थी तेरे आंगन में अब अंधेरी आ गया ॥

किसानों का अब मजदूर करेंगे भला,
देख लेना तेरा जान देंगे जला,
मजदूरों का ही बनेगा सरकार,
जिससे सम्हलेगा सबका कारोबार ।

मजदूरों ने सबका मन बगिया में फूल खिला दिया ।
चांदनी थी तेरे आंगन में, अब अंधेरी आ गया ।
तोर जैसे सरकार को हटायेंगे अब,
तभी सुख चैन का नींद सो पायेंगे सब ।
सबका भला करते जायेंगे, झोपड़ी में रोशनी लायेंगे,
खायेंगे पेट भर दानापानी, न करने देंगे तेरा मनमानी ।।
देखो भाईचारा का प्यार, हम लूटा गया
चांदनी थी तेरे आंगन में, अब अंधेरी आ गया ।।

कमलेश कुमार शुक्ला
सिम्पलेक्स, टेडेसरा में कार्यरत

अनुसूईया के कसम खाके अब
देश के गरीबी भगाना हे ।।
सुनो संगवारी हो झण्डा के लाज बचाना हे,
हरा झण्डा कें राहत ले गरीब के गरीबी भगाना हे ।।

मनहरण लाल साहू
सिम्पलेक्स, टेडेसरा के श्रमिक

लाल हरा झंडा कें राहत ले,
गरीब के गरीबी भगाना हे

सुनो-सुनो मोर भइया हो, झण्डा के लाज बचाना हे ।
ये लाल हरा झंडा के राहत ले, गरीब के गरीबी भगाना हे ।।
हमर गरीब के गरीबीन बहिनी, हमला छोड़ चले गये
लाल हरा झंडा ला तुमन धरहू, गये के बेरा में कहेहे ।।
सब गरीब भाई बहिनी मिलके, हमर देश के गरीबी भगाना हे ।
सुनो-सुनो संगवारी हो ।
छोटे-बड़े भाई ला समझाओ ।।
इही लाल हरा झण्डा ला लहराना हे ।
सुनो–सुनो मोर भइया.....।
हमर गरीब के अधिकार के खातिर, अपन प्राण ला गंबाइस ।
सब मजदूर के हक ला दिलाके,
लाल हरा लहराईस ।।